उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सम्पूर्ण चौहान

उत्तराखण्ड की नदियाँ

उत्तराखण्ड की भूमि अनेक सदाबहार नदियों की उद्गम स्थली है, ये नदियाँ हिमाच्छादित पर्वत शिखरों पर स्थित ग्लेशियरों से उत्पन्न होती हैं, इन नदियों में जल का विशाल भण्डार सदैव प्रवाहित होता है। इन नदियों में से अनेक अपनी विशाल जलराशि के लिए ही नहीं वरन् अपने पवित्र जल एवं धार्मिक महत्व के लिए भी प्रसिद्ध है।

किसी भी क्षेत्र की नदियों का उद्भव या विकास का सम्बन्ध उस क्षेत्र की भौगोलिक एवं भौतिक रचना से होता है। भौगोलिक स्वरूपों के परिवर्तन के साथ ही वहां की प्रवाह प्रणाली में भी परिवर्तन आने लगता है, जिसके कारण उस क्षेत्र में अनेक जलागम व सूक्ष्म जलागम परिवर्तित हो जाते हैं या उनका आकार बदल जाता है। उत्तराखण्ड की अधिकांश नदियाँ ऋतुगामी प्रवाह से सम्बन्धित न होकर पूर्वगामी प्रवाह से सम्बन्धित हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सम्पूर्ण चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

भौगोलिक दृष्टि से प्रदेश को तीन प्रमुख जलागम क्षेत्रों में विभाजित किया गया है—

(1) भागीरथी - अलकनन्दा जल प्रवाह तंत्र
(2) यमुना - टोंस जल प्रवाह तंत्र
(3) काली - शारदा जल प्रवाह तंत्र

(1) भागीरथी-अलकनन्दा जल प्रवाह तंत्र ⇒

भागीरथी का उद्गम गोमुख (उत्तरकाशी) से होता है तथा अलकनन्दा का उद्गम सतोपंथ (चमोली) से होता है।

इस प्रवाह क्षेत्र के अंतर्गत उत्तरकाशी जनपद के पश्चिमी भाग को छोड़कर सम्पूर्ण गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, चमोली तथा अल्मोड़ा जनपद के पश्चिमी क्षेत्र सम्मिलित हैं, वस्तुतः भागीरथी और अलकनन्दा, महाविद्यालय के चौखम्भा शिखर के विपरीत ढालों से उद्गमित हैं। अलकनन्दा, भागीरथी की प्रमुख सहायक नदी है तथा भागीरथी से लम्बा प्रवाहपथ बनाती है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494

हिमालय की चोटियों की जलधाराओं से निर्मित अलकनन्दा, जिसे प्राचीन ग्रन्थों में विष्णुगंगा कहते हैं, वसुधारा प्रपात (112 mt ऊँचा) इसी अलकनंदा नदी पर स्थित है,

बद्रीनाथ धाम से 5 km दूर, अंतिम भारतीय सीमान्त गाँव, माणा के पास सतोपंथ नामक स्थान पर स्थित देवताल से सरस्वती नदी, केशवप्रयाग में अलकनन्दा नदी से संगम बनाती है।

धौलीगंगा, नीति क्षेत्र में धौलागिरी पर्वत की कुलनुन श्रेणी से निकलकर विष्णुप्रयाग में अलकनन्दा नदी में मिल जाती है। विष्णुप्रयाग से पाखी तक अलकनन्दा, अत्यंत संकरी घाटी में बहती है। चमोली (अलकापुरी) से 21 km पहले बालखिल्य नदी तुंगनाथ-रुद्रनाथ की श्रेणियों से निकलकर अलकनन्दा में समा जाती है। आगे चलकर विरहीगंगा, पातालगंगा व गरुड़गंगा, अलकनन्दा में सम्मिलित हो जाती है। नन्दाकिनी हिरण्य पर्वत से निकलकर पूर्वी-पश्चिमी प्रवाह पथ बनाती हुई, नन्दप्रयाग में अलकनन्दा से संगम बनाती है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

पिण्डर नदी (कर्ण गंगा), बागेश्वर में पिण्डारी ग्लेशियर से निकलकर दक्षिणी-पूर्वी प्रवाहपथ बनाती हुई कर्णप्रयाग में अलकनन्दा नदी में मिल जाती है। दूधातोली पर्वत के उत्तरी ढाल से निकलने वाली आटागाड़, पिण्डर की प्रमुख सहायक नदी है।

मन्दाकिनी, केदार-हिमालय के दक्षिणी-पश्चिमी ढाल की मन्दराचल श्रेणी से निकलकर रुद्रप्रयाग में अलकनन्दा से संगम बनाती है। इसकी प्रमुख सहायक नदी मधुगंगा, मद्महेश्वर श्रेत से निकलकर गुप्तकाशी से नीचे कालीमठ के पास मन्दाकिनी में मिल जाती है।

अलकनन्दा की प्रमुख सहायक नदियों में वसुधारा, कंचनगंगा, क्षीरगंगा, पुष्पावती (हेमगंगा या लक्ष्मण गंगा), भ्यूंडर गंगा (कवन गंगा) अमृतगंगा, सोनधारा, चन्द्रधारा तथा हिमलो नदी प्रमुख हैं।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 लालकुआं नैनीताल

भारत की सबसे पवित्र नदी गंगा का उद्गम उत्तरकाशी जनपद के गंगोत्री ग्लेशियर से होता है। राजा भगीरथ के अथक प्रयास से गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई। अपने उद्गम स्थान से देवप्रयाग तक गंगा नदी राजा भगीरथ के नाम से भागीरथी कही जाती है। 4050 मीटर की ऊँचाई पर स्थित केदारताल से निकलने वाली केदारगंगा, टकनौर मल्ला के थामला दर्रे के पास हिमनद से निकलने वाली तथा भैरोंघाटी में संगम बनाने वाली जान्हवी (जाड़ गंगा), उडीताल से निकलकर गंगोरी के पास मिलने वाली भिलंगना नदी, जो टिहरी बाँध के निर्माण से पूर्व तक भागीरथी की प्रमुख सहायक नदी थी, भिलंगना नदी खतलिंग हिमानी से निकलती है। खतलिंग 3,658 mt की ऊंचाई पर स्थित है, जिसके आसपास कई सुन्दर एवं आकर्षक ताल स्थित हैं। भागीरथी एवं भिलंगना का संगम स्थल गणेशप्रयाग, टिहरी नगर के निकट है। इन दोनों का अस्तित्व टिहरी बाँध परियोजना के पूर्ण होने के साथ ही समाप्त हो गया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 लालकुआं नैनीताल

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

आला के समीप सियागंगा तथा भागीरथी का संगम होता है। बाँध से निकलकर भागीरथी की नियंत्रित जलधारा पूर्व की भाँति देवप्रयाग में अलकनन्दा से संगम बनाती है तथा गंगा कहलाती है, किन्तु केदारखण्ड पुराण के अनुसार हरिद्वार को गंगाद्वार माना गया है, अर्थात हरिद्वार से ही भागीरथी को गंगा नाम दिया गया है।

देवप्रयाग से आगे, गढ़वाल जनपद की प्रमुख नयार नदी (नवालका), दो जलधाराओं पूर्वी नयार तथा पश्चिमी नयार नदियों की संयुक्त धारा है। पूर्वी नयार नदी दूधातोली पर्वत श्रृंखला (2835 mt) की जसमोली धार श्रेणी से निकलकर प्रारंभिक अवस्था में स्यूंसी या कैन्यूर गाड़ कहलाती है, दक्षिणी-पश्चिमी प्रवाहपथ बनाती हुई यह नदी बैजरो के पास पश्चिमी मोड़ ले लेती है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

रीठाखाल के पास उत्तर की पुनः बहती हुई दक्षिण-पश्चिम दिशा में मुड़कर सतपुली के पास नौगांव-कामंदा नामक स्थान पर पश्चिमी नयार नदी से संगम बनाती है।

पश्चिमी नयार नदी की उत्तरी शाखा (स्योलीगाड़) दूधातोली श्रृंखला के उत्तरी-पश्चिमी ढाल से निकलकर, उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण-पश्चिम मार्ग से पैठानी के पास, दक्षिणी मुख्य शाखा दैज्वलीगाड़ में मिल जाती है। प्रारम्भिक अवस्था में इस नदी का नाम दैज्वलीगाड़ ही है। पूर्वी नयार में मिलने से पूर्व ज्वाल्पा देवी के निकट यह उत्तर-पश्चिम दिशा में प्रवाहित होती है।

प्राचीनकाल में दोनों नयार नदियों के संगम स्थल को वैनतेयक तीर्थ कहा जाता था, यहीं से बद्रीनाथ धाम पहुंचने के लिए-कर्णप्रयाग तथा आदि बद्री होकर दो पैदल मार्ग थे। यह तीर्थ नयार घाटी का सिंहद्वार था।

पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों नदियों के संगम के पश्चात नयार (नारदगंगा तथा इन्द्रावती) के नाम से प्रवाहमान यह नदी, उत्तरी-पश्चिमी दिशा में अनेक सर्पिल मोड़ बनाती हुई, ऋषिकेश

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077038494

से पहले व्यासघाट (भास्कर क्षेत्र या इन्द्रप्रयाग) के पास फूलचट्टी नामक स्थान पर गंगा में मिल जाती है। पौराणिक ग्रन्थों में इस नदी को साणी, कुशजीर्णा तथा खीर गंगा भी कहा गया है।

भागीरथी की सबसे पहले सहायक नदी भोजगाड़ नदी है, जिसका भृगु सरोवर से उद्गम होता है। गंगोत्री के समीप घाट नामक स्थान है जहाँ पर राजा भगीरथ ने तपस्या की थी तथा यहीं पर भगीरथ शिला स्थित है। भागीरथी की एक अन्य सहायक नदी रुद्रगंगा है, जो रुद्रगैरा हिमनद से निकलती है।

गंगोत्री धाम के कपाट बन्द होने के पश्चात ~~बाबा केदार~~ गंगोत्री की डोली मुखवा गांव में रहती है तथा गंगा मैय्या की शीतकालीन पूजा यहीं होती है। इसी के निकट कल्पकेदार मंदिर है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

श्रीकंठ पर्वत से निकलने वाली दूधगंगा नदी भैरोंघाटी के निकट भागीरथी में संगम बनाती है।

हर्षिल से पहले भागीरथी में हरिगंगा नदी का संगम हरिप्रयाग नामक स्थान पर होता है।

Note → ① सूर्यकुण्ड, लोहारीनाग का मंदिर उत्तरकाशी में स्थित है।

② उत्तरकाशी के अंगाड़ गांव में डोडीताल स्थित है।

उत्तरकाशी के गंगोरी नामक स्थान पर भागीरथी में असीगंगा तथा मातली नामक स्थान पर वरुणा नदी मिलती है।

Note → गंगोत्री से देवप्रयाग तक भागीरथी नदी की लम्बाई 205 km है।

उत्तराखण्ड ज्ञान कोष
9411365798
8077038494
सेवापाल जोशी

पंचप्रयाग

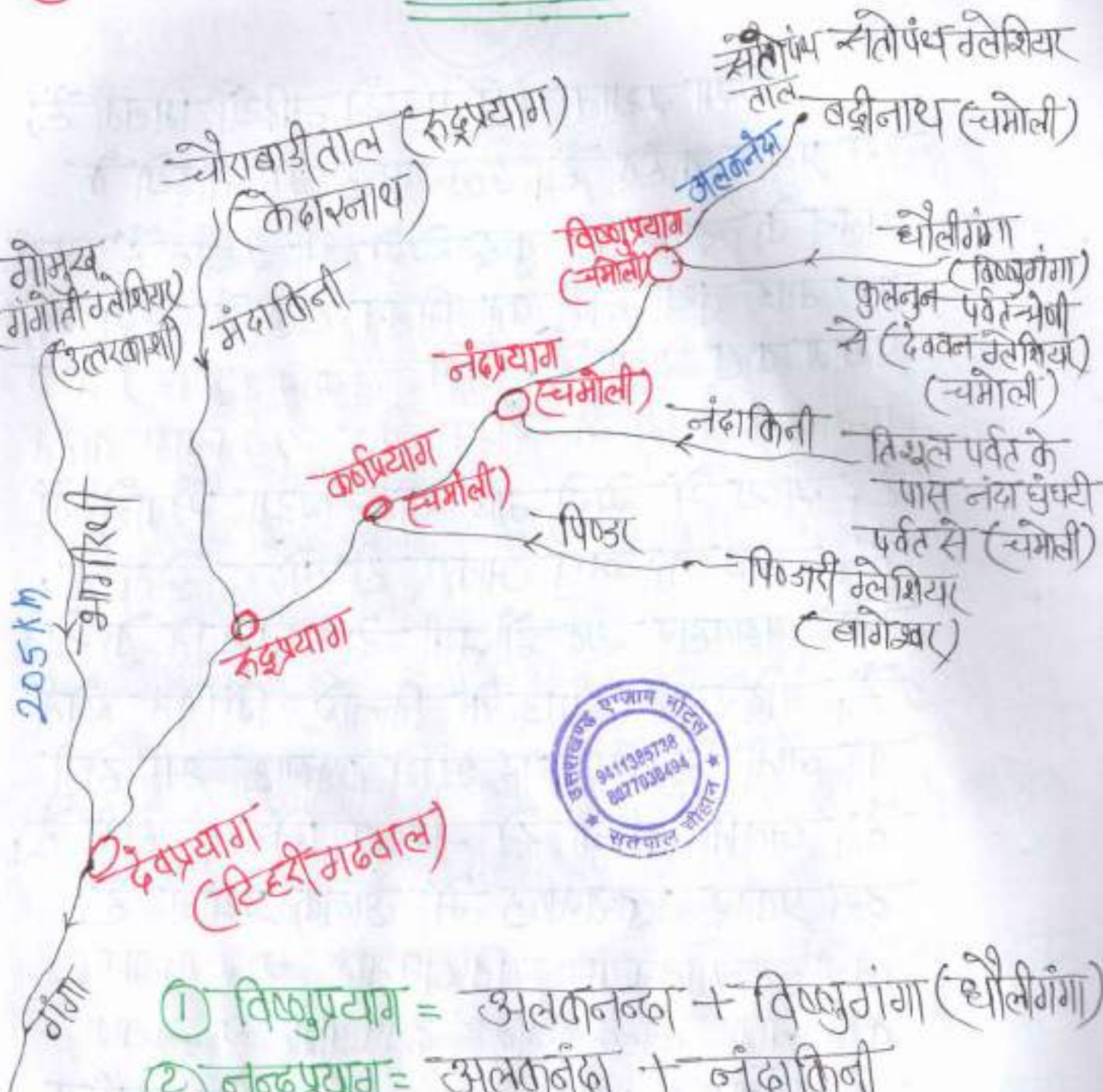

उत्तराखण्ड ज्ञान कोटा
9411385738
8077038494
सतपाल चौहान

1. विष्णुप्रयाग = अलकनन्दा + विष्णुगंगा (धौलीगंगा)
2. नन्दप्रयाग = अलकनंदा + नंदाकिनी
3. कर्णप्रयाग = अलकनंदा + पिण्डर
4. रुद्रप्रयाग = अलकनंदा + मंदाकिनी
5. देवप्रयाग = अलकनन्दा + भागीरथी

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 अल्मोड़ा

ऐसा स्थान जहाँ पर दो नदियाँ मिलती हैं, उसे प्रयाग कहते हैं। उत्तराखण्ड में नदियों के मिलन के साथ ही कुछ ऐसे भी स्थान हैं, जहाँ पर गाड़ तथा नदी का मिलन होता है, उसे भी प्रयाग कहा गया है। जैसे लस्तर (गाड़) तथा मन्दाकिनी नदी के संगम को सूर्यप्रयाग कहते हैं। राज्य में ऐसे गाड़ की संख्या सैकड़ों में है। गाड़ का लघु आकार ही गेदेरा होता है, जो सदाबहार एवं मौसमी दोनों प्रकृति के होते हैं। गेदेरे तथा गाड़ के किनारे सिंचित खेती की जाती है और यह भूमि उपजाऊ भी होती है। जबकि नदियों से नगण्य सिंचाई होती है। इस प्रकार उत्तराखण्ड में अनेक प्रयाग हैं। जैसे- सोनप्रयाग, विष्णुप्रयाग, सूरजप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, गणेशप्रयाग, केशवप्रयाग आदि। किन्तु पाँच प्रयागों का विशेष धार्मिक महत्व है। केदारखण्ड के अंतर्गत गढ़वाल भू- भाग में पंच प्रयाग धर्मपरायण श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धा का केंद्र है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

विष्णुप्रयाग →

जनपद चमोली में बद्रीनाथ मार्ग पर जोशीमठ से 10 km की दूरी पर अलकनन्दा तथा विष्णुगंगा (धौली गंगा) का संगम विष्णुप्रयाग समुद्रतल से लगभग 1372 मीटर की ऊँचाई पर है। मान्यतानुसार यहाँ पर देवर्षि नारद ने अष्टाक्षरी मंत्रों का जाप किया था तथा विष्णु की आराधना की थी, यहीं पर भगवान विष्णु का साक्षात दर्शन भी उन्होंने किया था, विष्णुप्रयाग संगम के दोनों ओर जय और विजय पर्वत विराजमान है, साथ ही थोड़ी दूरी पर स्थित हाथी पर्वत को देखते ही मन रोमांचित हो जाता है।

विष्णुप्रयाग में भगवान विष्णु का मंदिर भी है, जिसके निर्माण का सारा श्रेय इंदौर की महारानी अहिल्याबाई को दिया जाता है, महारानी ने सन 1889 में भगवान विष्णु के मंदिर का निर्माण कराया था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

(14)

नन्दप्रयाग →

जनपद-चमोली में बद्रीनाथ मार्ग पर अलकनन्दा तथा मंदाकिनी का संगम नन्दप्रयाग समुद्रतल से 2500 फीट की ऊँचाई पर है, मान्यता है कि इस स्थल पर सत्यवादी राजा नन्द ने तपस्या की थी, यहाँ पर सत्यनारायण मंदिर, गोपाल मंदिर, भगवती चंडिका मंदिर के साथ ही शिवगुफा भी है। जनश्रुति है कि प्राचीन काल में कण्व ऋषि का आश्रम तथा शकुंतला का जन्म स्थान नंदप्रयाग में ही था, इस स्थान को द्वापर युग में यदु साम्राज्य की राजधानी माना जाता था।

यहाँ पर लक्ष्मीनारायण का प्राचीन मंदिर है, इसके अतिरिक्त नन्दा, चंडिका, विष्णु एवं विशिष्टेश्वर महादेव के मंदिर भी हैं। सन 1803-04 के विनाशकारी भूकम्प 1894 की बिरही की बाढ़ से पूर्व यहाँ का देवस्थल तथा कस्बा इसके संगम स्थल पर ही हुआ करता था, किन्तु इसके बाद यह स्थानांतरित कर दिया गया था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077038494
सतपुल चौहान

कर्णप्रयाग →

जनपद-चमोली में ही अलकनन्दा एंव पिण्डर का संगम कर्णप्रयाग है, इसकी ऊँचाई समुद्रतल से लगभग 2400 फीट है। कर्णप्रयाग धर्नुधारी दानवीर कर्ण की तपस्थली है, यहाँ पर उमा का प्राचीन मंदिर भी है। कर्णप्रयाग में कालेश्वर का काल भैरव मंदिर तथा जलेश्वर महादेव मंदिर भी प्रसिद्ध है। कर्णप्रयाग पौराणिक समय में एक उन्नतिशील बाजार भी था और देश के अन्य जगह से आकर लोग यहाँ निवास करने लगे क्योंकि यहाँ व्यापार के अवसर उपलब्ध है,

इन गतिविधियों पर वर्ष 1803 को बिरेही बांध टूटने के कारण रोक लग गयी, उस समय इस स्थान में उमा देवी मंदिर का भी नुकसान हुआ,

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077038494
सतपुल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम न्यूज़ 9411385738 8077036494 लक्ष्मण चौहान

रुद्रप्रयाग →

जनपद रुद्रप्रयाग के मुख्यालय में अलकनंदा एंव मंदाकिनी नदी का संगम रुद्रप्रयाग है। रुद्रप्रयाग समुद्रतल से लगभग 2200 फुट (672 mt) की ऊँचाई पर स्थित है। संगम के समीप ही रुद्रेश्वर मंदिर है। भगवान कोटेश्वर महादेव तथा शिवगुफा भी 3Km की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर अलकनंदा की धारा इस प्रकार से प्रवाहित होती है कि लगता है कि क्षणभर के लिए नदी गुफा को भूल गयी हो किन्तु अगले ही क्षण लौटकर अभिनन्दन सी करती हुई प्रतीत होती है। लोकमत है कि वर्षा ऋतु में जब तक नदी की धारा शिवगुफा में शिवजी का जलाभिषेक नहीं करती है तब तक वर्षान्त नहीं हो सकता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम न्यूज़ 9411385738 8077036494 लक्ष्मण चौहान

देवप्रयाग ⇒

उत्तराखण्ड एग्जाम मोटिवेशन 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

जनपद टिहरी गढ़वाल के बद्रीनाथ मार्ग पर अलकनन्दा तथा भागीरथी का संगम देवप्रयाग है। इसकी समुद्रतल से ऊँचाई 1800 फुट (457 mt) है। देवप्रयाग का रघुनाथ मंदिर व शंकराचार्य गुफा प्रसिद्ध है। देवप्रयाग संगम का विशेष महत्व है। यहाँ रामनवमी, बसन्त पंचमी तथा विजयदशमी पर विशाल मेले लगते हैं। मान्यता है कि त्रेता युग में भगवान राम ने यहाँ पर तपस्या की थी। रघुनाथ मंदिर उत्तरकाशी के नौगाव रोल के कंडारी गाँव में भी स्थित है।

अलकनन्दा तथा भागीरथी के संगम पर निकट में दो जलकुण्डों का निर्माण हो गया है। इसमें से अलकनन्दा की ओर से कुण्ड को "वशिष्ठ कुण्ड" तथा भागीरथी की ओर के कुण्ड को "ब्रह्मकुण्ड" कहा जाता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम मोटिवेशन 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

अन्य नदियाँ

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

रामगंगा नदी → यह नदी गढ़वाल जिले की दूधातोली पर्वत श्रृंखला के पूर्वी ढाल से निकलकर कुमाऊँ के लोभा चौखटिया (अल्मोड़ा) क्षेत्रों में बहती हुई कालागढ़ (पौड़ी गढ़वाल) के पास भाबर में प्रवेश करती है, जहाँ पर कालागढ़ बाँध तथा जल विद्युत उत्पादन संयंत्र बनाया गया है। यहाँ से मुरादाबाद होती हुई यह नदी कन्नौज के पास गंगा में मिल जाती है। पर्वतीय क्षेत्र में बिनो तथा गगास, रामगंगा की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। प्रारंभिक अवस्था में रामगंगा नदी का नाम कुसांध गाड़, रिथिया, लोभावती तथा रथस्या था। मानसखण्ड में उल्लेख है कि द्रोण पर्वत के एक शिखर, लोधशृंग पर परशुराम की तपस्थली होने के कारण इस नदी का मूल नाम परशुराम गंगा था जो कालान्तर में केवल रामगंगा रह गया है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

खोह नदी ⇒ यह नदी गढ़वाल की पट्टी लंगूर से आने वाली लंगूरगाड़ तथा पट्टी सीला से प्रवाहमान सिलगाड़ के संगम के पश्चात दुगड्डा से आगे खोह नदी के नाम से कोटद्वार होती हुई धामपुर के पास गंगा में मिल जाती है। कोटद्वार से आगे भाभर के बलुआ पत्थर एंव मोटे कणों वाली पट्टी में यह नदी अदृश्य होकर बहती है, सम्भवतः इसी कारण इसका नाम "खो" (लुप्त) पड़ गया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम न्यूज़ 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

"गंगा - भागीरथी - अलकनंदा नदी तंत्र से संबंधित महत्वपूर्ण जल विद्युत परियोजनाएँ"

	परियोजना	नदी	स्थान	क्षमता (मेगावाट)
(1)	उत्यासू जल विद्युत परियोजना	अलकनंदा	पौड़ी	1000
(2)	विष्णु गाड़ जल विद्युत परियोजना	अलकनंदा	चमोली	400
(3)	देवल (चमोली हाइड्रो पावर लिमिटेड)	कालीगंगा	चमोली	5
(4)	राजवाक्ती परियोजना	अलकनंदा	नंदप्रयाग	4.4
(5)	बनाला (हीमा ऊर्जा प्रा० लि०)	नंदाकिनी	चमोली	15
(6)	विरही गंगा परियोजना	अलकनंदा	चमोली	7.2
(7)	ऋषिगंगा परियोजना	ऋषिगंगा	चमोली	13.5
(8)	लोहारीनाग पाला परियोजना	भागीरथी	उत्तरकाशी	600

उत्तराखण्ड एग्जाम न्यूज़ 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल कोहली

(9) चीला परियोजना	भागीरथी और अलकनंदा	पौड़ी	144
(10) टिहरी जल विद्युत परियोजना	भागीरथी	टिहरी	1000
(11) मनेरी भाली-1 परियोजना	भागीरथी	उत्तरकाशी	90
(12) मनेरी भाली-2 परियोजना	भागीरथी	उत्तरकाशी	304
(13) कोटेश्वर बांध परियोजना	भागीरथी	टिहरी	400
(14) लोहारीनाग-पाला परियोजना	भागीरथी	उत्तरकाशी	600
(15) कोटलीभेल परियोजना	गंगानदी	टिहरी	100
(16) भिलंगना परियोजना	भिलंगना	टिहरी	22.5
(17) भिलंगना-2 परियोजना	भिलंगना	टिहरी	22

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल कोहली

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494 रुद्रपाल चौहान

(18)	पथरी परियोजना	गंगा नहर	हरिद्वार	20.4
(19)	मोहम्मदपुर	गंगा नहर	हरिद्वार	9.3
(20)	करमोली	जाड़ गंगा	उत्तरकाशी	140
(21)	श्रीनगर	अलकनंदा	पौड़ी गढ़वाल	330
(22)	बगोली डैम	पिण्डर	चमोली	272
(23)	मलेरी झेलम	धौली गंगा	चमोली	55
(24)	देवसारी	विरही गंगा	चमोली	300
(25)	लाटा तपोवन	अलकनंदा	चमोली	310
(26)	मेलखेत	पिण्डर	चमोली	56
(27)	पाडुली डैम	पिण्डर	चमोली	27
(28)	सिंगोली भटवाड़ी	मंदाकिनी	रुद्रप्रयाग	60

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494 रुद्रपाल चौहान

महत्वपूर्ण प्रश्न

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494

1. स्कन्दपुराण में किन सात नदियों को सप्त सामुद्रिक स्रोत कहा गया है — अलकनन्दा, धौलीगंगा, पिण्डर, नंदाकिनी, मंदाकिनी, भागीरथी, नयार

2. अलकनंदा तथा लक्ष्मणगंगा का संगम किस स्थान पर होता है — गोविन्दघाट

3. लक्ष्मण गंगा | भ्यूंडार गंगा का संगम पुष्पावती नदी से किस स्थान पर होता है — घंघरिया (चमोली)

4. गणेशगंगा, गिरथी, कियोगाड़ किसकी सहायक नदियाँ हैं — फ० धौलीगंगा

5. सिसवा, वाल्दी, विद्यालना, रौं किसकी सहायक नदियाँ हैं — सौंग

6. चन्द्रभागा नदी तथा सोंग नदी का संगम किस स्थान पर होता है — रायवाला

7. रिस्पना तथा बिन्दाल किसकी सहायक नदियाँ हैं — सिसवा

उत्तराखण्ड एग्जाम नोटस 9411385738 8077036494

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

(8) सद्गंगा, जान्हवी या जाड्गंगा, केदारगंगा, असीगंगा, मिलुनगंगा, सियागंगा किसकी नदी की सहायक नदियाँ हैं — भागीरथी

(9) भागीरथी + भिलंगना = गणेशप्रयाग (पुरानी टिहरी)
यह शहर अब टिहरी बांध के टूटने के कारण जलमग्न हो गया,

नोट ⇒ भिलंगना खतलिंग ग्लेशियर से निकलती है, मेदोगंगा, दूधगंगा, धर्मगंगा, बालगंगा भिलंगना की सहायक नदियाँ हैं,

(10) अलकनन्दा + सरस्वती = केशवप्रयाग (चमोली)

(11) मधु गंगा + मंदाकिनी = कालीमठ (रुद्रप्रयाग)

(12) अलकनन्दा तथा भागीरथी का संगम देवप्रयाग (टिहरी) में होता है, इसे सास-बहू का संगम भी कहा जाता है, जिसमें भागीरथी को सास तथा अलकनंदा को बहू कहा जाता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान